कालू बन गया चोदू-2

“Kalu Ban Gaya Chodu-2 कालू बन गया चोदू-1

दोस्तो, बचपन का प्यार भी कितना अजीब होता है ना, मुझे पता ही नहीं था कि नेहा मेरे बारे में क्या सोचती... [Continue Reading] ...”

Story By: (amitdubey)
Posted: Monday, March 2nd, 2015
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: कालू बन गया चोदू-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

कालू बन गया चोदू-2

Kalu Ban Gaya Chodu-2

कालू बन गया चोदू-1

दोस्तो, बचपन का प्यार भी कितना अजीब होता है ना, मुझे पता ही नहीं था कि नेहा मेरे बारे में क्या सोचती है पर पता नहीं क्यों उसके हाव-भाव से यह लगता था कि कहीं ना कहीं वो भी मुझ से प्यार करती है।

दोस्तो, बीच के एक साल नेहा हमारे यहाँ आई नहीं, मुझे बहुत बुरा लगा, उसे बहुत याद किया, फिर दोस्तों की संगत ने मुझे हस्तमैथुन भी करना सिखा दिया और अब मैं समझने लगा था कि लड़की के साथ क्या किया जाता है और कैसे किया जाता है।

बात अब तब की है जब मैं समझदार हो गया था, इस साल नेहा मेरे घर आई और किस्मत से आई भी उस दिन जिस दिन मेरा जन्मदिन था।

भगवान ने मुझे जन्मदिन का बहुत बड़ा तोहफा दे दिया था, नेहा को देख लेना भर ही मेरे लिए काफी था।

शाम को जन्मदिन की पार्टी हुई और सभी ने मुझे कोई ना कोई उपहार दिया, पर नेहा ने कुछ नहीं दिया।

जब मैं अकेला कमरे में बैठा था तो नेहा मेरे पास आकर बैठ गई और बोली- मैं तुम्हें तुम्हारे जन्मदिन पर खास तोहफा देना चाहती हूँ।

मैं कुछ समझ पाता, उससे पहले उसने मेरे गाल पर एक मस्त चुम्मी दे दी।

मैं तो हैरान रह गया, मेरी सिट्टीपिट्टी गुम हो गई, ऐसा लगा जैसे मुझे सब कुछ मिल गया हो।

दोस्तो, नेहा के बारे में आपको बताता हूँ। नेहा एक किशोर कमसिन कच्ची कलि थी, जिसके उरोज 28 के कमर 24 और इतनी गोरी चिट्टी थी कि जोर से पकड़ लो तो जहाँ से पकड़ों वहाँ लाल निशान पड़ जाए।

अब मुझे लगने लगा था कि नेहा का पूरा ध्यान मुझ पर ही रहता है। हम जहाँ भी होते, बस एक दूसरे को ही देखते रहते, एक दूसरे से बात करने का मौका खोजते रहते थे।

मैंने सोचा कि क्यों ना मैं नेहा से अपने प्यार का इजहार कर दूँ, उसे बता दूँ कि मैं उसे कितना प्यार करता हूँ।

मैंने हमेशा नेहा से शादी करने के बारे में ही सोचा था पर एक दिन मुझसे बहुत ही गलत हरकत हो गई।

हुआ यूँ कि एक दिन भरी गर्मी में हम सब थक हार के दिन में हमारे यहाँ छत पर बने कमरे में सो गए।

किस्मत से नेहा मेरे पास ही सोई थी, पहली बार मेरा मन हुआ कि मैं नेहा के मस्त उरोजों को मसलूँ।
मेरे प्यार पर मेरा सेक्स हावी हो गया था।

यह सेक्स भी ऐसी चीज है कि सब कुछ भुला देता है।

मेरे कांपते हाथों ने नेहा के उरोजों पर उसकी कुर्ती के ऊपर से हाथ लगाया और कुछ देर

हाथ वहीं रहने दिया।
ऐसा लग रहा था कि मेरे हाथ दुनिया का सबसे बड़ा खजाना लग गया हो।

यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

मैंने उसके मासूम से उरोजों को मसला और दबाया। नींद में भी उसके चेहरे पर दर्द की शिकन देखी जा सकती थी।

फिर मैंने अपने होंठ नेहा के होंठों पर रख दिए और उसके स्तनों को मसलता रहा।

नेहा भी पता नहीं कौन सी मस्ती में थी कि वो हल्की हल्की सिसकारियाँ लेती रही पर जागी नहीं या पता नहीं वो जाग भी रही हो ?!

तोउसे मसलते मसलते मैं अपना लवड़ा जमीन पर मसलने लगा और मस्ती में उसके स्तन जबरदस्त मसल दिए और मेरे लंड ने चड्डी में ही लावा छोड़ दिया।

तत्पश्चात मैं उठ कर बाथरूम में चला गया और अपने आप को साफ़ किया।

उसके बाद मुझे पछतावा होने लगा कि यह कैसा प्यार है… ?… ?
मैंने बहुत गलत किया है !!

और मेरा मन अपने आपको धिक्कारने लगा, जिस हाथ ने नेहा के स्तनों को मसला था उन्हें मैंने सजा देने की सोची।

और एक ब्लेड से मैंने उस हाथ को काट दिया बहुत खून बहा पर मुझे कोई परवाह नहीं थी।

जब घर वालों को पता चला तो उन्होंने मुझे बहुत डांटा, नेहा को पता चला तो उसने मेरे हाथ को चूम कर प्यार किया।

मेरा सारा दर्द मानो सही हो गया हो।

मुझे पक्का यकीन हो चला था कि नेहा भी मुझसे प्यार करती है और अब मुझे अपने प्यार का इजहार कर देना चाहिए।

दोस्तो, वक्त यूँ ही कटता गया और ये छुट्टियाँ भी बीत गई।

फिर अगली छुट्टी तक मैं उसकी याद में जीता भी रहा, मरता भी रहा।

अगली मुलाकात जब हुई तब वो एक मस्त माल बन चुकी थी।

हम एक शादी में मिले, हर लड़के की निगाह उसके फिगर को देख रही थी, हर कोई उसे आँखों से ही चोद रहा था, वो अब ब्रा का भी उपयोग करने लगी थी और एक मस्त पटाखा लगने लगी थी।

जब हम दोनों की मुलाकात हुई तो उस शादी में आये कई लड़कों के अरमान टूट गए पर मैं उसके सामने कुछ भी नहीं लगता था, सांवला सा कुछ, तो भी ना बोलने का ढंग, ना ही रहने का, पर मुझे तो लगता था प्यार के लिए एक साफ़ दिल के अलावा कुछ नहीं चाहिए।

जिसकी शादी में हम गए थे, उन भैया की बारात जाने को थी और बस मैं नेहा और हम दोनों 2 की सीट पर बैठे और हमारी बातें चलने लगी।

बातों बातों में नेहा ने कहा- तुझसे जिस भी लड़की की शादी होगी वो बहुत खुशनसीब होगी… तू बहुत ही साफ़ दिल और बहुत प्यारा है।

उसने मुझसे पूछा- तेरी कोई गर्लफ्रेन्ड है ?

तो मैंने कहा- नहीं है…

तो उसने कहा- आज तक कोई मिली नहीं क्या ?

तो मैंने कहा- मुझे एक लड़की बहुत पसंद है, मैं उसे अपनी जान से भी ज्यादा चाहता हूँ।

वो बोली- बता कौन है, वो बहुत लक्की होगी वो…

मुझे लगा कि सही मौका है, मैंने उसे बोला- तू जानती है उसे, अभी भी वो यहीं है इसी बस में !

वो बोली- बात को घुमा फिरा मत, बता दे साफ़ साफ़ कौन है वो ?

मैंने बोला- जब से यह समझा है कि प्यार कुछ होता है, बस तुझ को ही देखा है, जाना है, चाहा है… नेहा, तुझे मैं जान से भी ज्यादा चाहता हूँ… तू है तो सब कुछ है, तू नहीं तो कुछ भी नहीं।

वो बोली- व्हाट ? क्या बक रहा है ? तेरा दिमाग तो ठीक है ? कहाँ तू और कहाँ मैं ? अपने आप को देखा है कभी ? गाल अंदर घुसे हुए, कुछ तो भी नहीं, तूने सोचा भी कैसे कि तू मुझसे प्यार कर सकता है ? तेरी औकात ही क्या है ?

दोस्तो, उस समय मैं अपने मोबाईल में उसकी और मेरी बात रिकॉर्ड कर रहा था।

मेरी आँखों में आँसू ही नहीं आये, बाकी मेरा दिल रो रहा था, पर वो बोले ही जा रही थी।

वो बोली- मेरी ही गलती है जो तुझ जैसे चिपकू लड़के से दोस्ती की, तुझे अपना दोस्त माना। तू मेरी दोस्ती के भी लायक नहीं है। आज के बाद मुझ से बात मत करना, वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।

मैंने उसे बोला- यह सही है कि मैं तुझसे प्यार करता हूँ और प्यार करता रहूँगा पर अगर

तुझे मैं पसंद नहीं तो कोई बात नहीं, हम दोस्त थे, रहेगें !

वो बोली- तुझ जैसे घटिया इन्सान से मुझे दोस्ती भी नहीं रखनी…

दोस्तो, मेरी हालत बहुत बुरी थी और इतने में बस के तेज ब्रेक लगे और बस रुक गई।

सभी लोग नीचे उतर गए, नेहा और मैं भी उतर गए।

नेहा को अकेली खड़ी देख कर मैं उसके पास गया और बोला- मुझ माफ़ कर दे, अब मैं कभी इस बात का जिक्र नहीं करूँगा, एक बार माफ़ कर दे…

तो वो पलट कर जाने लगी तो मैंने उसे रोकने के लिए उसका हाथ पकड़ लिया।

तो उसने पलट कर मेरे गाल पर एक जोरदार तमाचा मार दिया।

पता नहीं किसी ने देखा या नहीं, पर उसने मेरा दिल तोड़ ही दिया।

दोस्तो, बस पूरी भरी हुई थी और कुछ लोग छत पर भी बैठे थे तो मैं भी छत पर जाकर बैठ गया और अपनी किस्मत पर रोने लगा। अंधेरे में मेरे आँसू किसी को दिखाई नहीं दिए।

दोस्तो, गम इस बात का नहीं था कि उसने मुझे ठुकरा दिया, गम इस बात का था कि उसने मेरी दोस्ती भी तोड़ दी।

अगले दिन वो अपने एक रिश्तेदार अंकित के साथ रहने लगी और मैं अकेला हो गया।

शादी में आये लड़कों ने मुझे ताना दिया- क्यों हीरो ? सारी हीरोगिर्दी निकल गई ? कल तो बहुत चहक रहा था ? अपनी औकात के अनुसार लड़की चुना कर… कहाँ वो, कहाँ तू ? यह तो ऐसा हो गया कि ‘लंगूर के हाथ अंगूर’

मैं क्या बोलता… उस दिन पहली बार मैंने दारू पी।
बहुत अकेला महसूस कर रहा था अपने आप को !

वापस घर आकर अपने एक करीबी दोस्त जो जानता था कि मैं नेहा से कितना प्यार करता हूँ, उसे पूरा किस्सा सुनाया।

उसकी भी आंखें भर आई, वो बोला- अमित भाई, ये लड़कियाँ किसी की नहीं होती, ये प्यार करने लायक होती ही नहीं हैं, इन्हें तो चोदू बन कर चोदो। नेहा ने तुमको चूतिया बनाया है, वो टाइम पास कर रही थी, जब लगा कि तुम सही में प्यार करने लगे हो, आपको आपकी ही नजरों में गिरा दिया।

मैं बोला- भाई, उसके बिना जी नहीं पाऊँगा, मर जाऊँ यही सही है मेरे लिए!

वो बोला- भाई, कहाँ एक लड़की के पीछे मरने की बात कर रहे हो, उससे अच्छी अच्छी लड़कियाँ आपके लंड के नीचे होंगी, कोशिश तो करो!

उसने बोला- भाई सीधे सादे मत रहा करो, थोड़ा दिखावा करना शुरू करो… पुराने माल को भी नये पैकेट में डाल देते हैं तो वो नया हो जाता है।

उस दिन उसके रूम पर बैठ के बहुत दारू पी, ब्ल्यू फ़िल्म देखी और अगले दिन एक नये अमित का जन्म हुआ।

मैंने PD कोर्स ज्वाइन किया और अपने कपड़े बाल सब कुछ बदल दिया, नये तरीके से रहना चालू कर दिया, हर लड़की को चोदने की नजर से देखा।

मेरी पहली शिकार दीपा मेरे पड़ोस में रहने वाली लड़की बनी, उसे सात दिन में पटाया और 15 दिन निपटाया।

फिर यह सिलसिला चला तो बंद नहीं हुआ, पूजा, रानी, वर्षा, नीलिमा, पूनम, शिल्पा, नेहा, वो नेहा नहीं यह दूसरी थी, कई लड़कियां आई-गई, किसी को पटा के निपटाया तो किसी को बिना पटाए!

बीच बीच में नेहा भी हमारे घर आती जाती रही, पर उस से कभी बात नहीं हो पाई।

अब मुझे भी उससे नफरत सी हो गई थी, हर लड़की को निपटा के दिल को सकून देता था।

दोस्तो, शायद इन्सान ऐसे ही जानवर बनता है पर आज तक किसी भी लड़की को उसकी मर्जी के बिना मैंने नहीं निपटाया।

एक बार की बात है, एक लड़की मेरे नीचे थी, उसके और मेरे कपड़े खुले हुए थे और लंड बस चूत में जाने ही वाला था कि वो बोली- अमित, तूने मेरी जिन्दगी खराब कर दी।

मैं उठ गया, उसे छोड़ दिया और बोला- कपड़े पहन और निकल जा… जब तू सही में अपनी इच्छा से चुदना चाहे तब आना…

दोस्तो, कहते हैं ना, वक्त कब क्या करवा दे, कह नहीं सकते।

वही नेहा, जिसने मुझे ठुकराया, वो अपनी ही शादी में मुझ से चुदी…

यह कहानी भी आपके लिए लिखूँगा।

पर तब जब आप मुझे मेल करके प्रेरित करेंगे कहानी में लंड खड़ा और गीला कर देने वाला सेक्स होगा और चूत तो मस्त होकर पानी छोड़ देगी।